ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)-८४८१२५

बुलेटिन संख्या-५६
दिनांक- मंगलवार, २५ अगस्त, २०२०

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः ३३.६ एवं २५.४ डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता ९२ प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में ८१ प्रतिशत, हवा की औसत गति ८.० कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण २.० मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन ९.० घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा ५ से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में २९.६ एवं दोपहर में ३५.८ डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में २८.० मि०मी० वर्षा रिकार्ड हुई।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(२६-३० अगस्त, २०२०)

- ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी २६-३० अगस्त तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः-
- पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के तराई तथा मैदानी भागों के जिलों में आसमान में मध्यम बादल देखे जा सकते हैं। इस अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में अनेक स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा हो सकती है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान ३२ से ३५ डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान २६-२८ डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।
- पूर्वानुमानित अवधि में अगले दो दिनों तक पछिया हवा तथा उसके बाद पूरवा हवा चलने का अनुमान है। औसतन १०-१२ कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से हवा चलने की संभावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में ८० से ९० प्रतिशत तथा दोपहर में ६० से ७० प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- पूर्वानुमान की अवधि में वर्षा की संभावना को देखते हुए खड़ी फसलों में दवा का छिड़काव आसमान साफ रहने पर ही सावधानी पूर्वक करें।
- अगात धान की फसल में तना छेदक कीट की निगरानी करें। इसकी सूंडीयाँ तनो में घुसकर क्षती पहुचाती है। प्रारंभिक अवस्था में पौधें की मध्य कलिका मुरझाकर सुखी हुई नजर आती है। ऐसे पौधो में बालीयाँ सुखी एवं खोखली रह जाती है। इसे अगर पकड़कर खींचा जाए तो वह आसानी से बाहर निकल आती है। इस प्रकार का लक्षण दिखने पर बचाव के लिए फेरोमोन ट्रैप की १२ ट्रैप प्रति हेक्टेयर का प्रयोग करे। खेतो में ५ प्रतिशत क्षतिग्रस्त पौधें दिखाई देने पर करताप हाईड्रोक्लोराईड दाने-दार दवा का अथवा फिप्रोंनिल ०.३ जी का १० किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से व्यवहार करें।
- धान की फसल में खैरा बीमारी दिखाई पड़ने पर खेतों में जिंक सल्फेट ५.० किलोग्राम तथा २.५ किलोग्राम बुझा चूना का ५०० लीटर पानी में घोल बना कर एक हेक्टेयर में छिड़काव आसमान साफ रहने पर ही करें। पिछात धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दें।
- परवल की राजेन्द्र परवल-१, राजेन्द्र परवल-२, एफ०पी०-१, एफ०पी०-३, स्वर्ण रेखा, स्वर्ण अलौकिक, आई०आई०भी०आर०-१ आदि किस्मों की रोपनी करें। बीज दर २५०० गुच्छियाँ प्रति हेक्टेयर तथा लगाने की दुरी २ग२ मीटर रखें। परवल की रोपाई के लिए प्रति गड्ढ़ा कम्पोस्ट ३ से ५ किलो ग्राम, नीम या अंडी की खल्ली २५० ग्राम, एस०एस०पी० १०० ग्राम, म्यूरेट ऑफ पोटाश २५ ग्राम एवं थिमेट १० से १५ ग्राम का व्यवहार करें।
- हल्दी, अदरक, ओल और बरसाती सब्जियों में आवश्यकतानुसार निकाई-गुड़ाई करें। इन फसलों में कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
- मिर्च की नर्सरी गिराने का कार्य अविलंब संपन्न करें। जिनका पौध तैयार हो वे किसान रोपनी करें। रोपाई पूर्व जीवाणु खाद से विचड़ों का उपचार अवश्य करें।
- मक्का की खड़ी फसल में तना छेदक कीट की निगरानी करें। बचाव के लिए कार्बोफ्यूरान (३ जी) का ७ किलोग्राम/हे० की दर से पौधें के गाभा में डालें।
- फूलगोभी की अगात किस्में कुँआरी, पटना अर्ली, पूसा कतकी, हाजीपुर अगात, पूसा दिपाली की रोपाई समाप्त करें। बोरान तथा मॉलिब्डेनम तत्व की कमी वाले खेत में १०-१५ किलो ग्राम बोरेक्स तथा १-२ किलोग्राम अमोनियम मालिब्डेट का व्यवहार खेत की तैयारी के समय करे। फुलगोभी की मध्यकालीन किस्में अगहनी, पूसी, पटना मेन, पूसा सिन्थेटिक-१, पूसा शुभ्रा, पूसा शरद, पूसा मेघना, काशी कुवाँरी एवं अर्ली स्नोबॉल किस्मों की बुआई नर्सरी मे उथली क्यारियों मे पंक्तियों में गिराये। पौधशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए ४० प्रतिशत छायादार नेट से ६-७ फीट की ऊचाई पर ढ़कने की व्यवस्था करें।
- सितम्बर अरहर की बुआई उचॉस जमीन में करे। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर २० किलोग्राम नेत्रजन, ४५ किलोग्राम स्फुर,२० किलोग्राम पोटाश तथा २० किलोग्राम सल्फर का व्यवहार करें। अरहर की पूसा-९ तथा शरद प्रभेद उत्तर बिहार के लिए अनुसंशित है। बुआई के २४ घंटे पूर्व २.५ ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। जुन-जुलाई में बोयी गई अरहर की फसल में कीट-व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
- उरद् की फसल में पीला मोजैक वायरस से ग्रस्त पौधों को उखार कर नष्ट कर दें। बीमार पौधों की पत्तियों पर पीले सुनहरे चकत्ते पायें जाते है एवं बीमारी की उग्र अवस्था में पूरी पत्ती पिली पड़ जाती है। पत्तियॉ आकार में छोटी हो जाती है। पुष्प एवं फलन प्रभावित हो जाती है। यह रोग सफेद मक्खी द्वारा फैलता है। रोग के विस्तार से बचाव के लिए इमिडाक्लोप्रिड एक मी०ली० प्रति ३ लीटर पानी की दर से घोल बनाकर आसमान साफ रहने पर छिड़काव करें।

आज का अधिकतम तापमानः ३४.५ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से २.४ डिग्री अधिक	आज का न्यूनतम तापमानः २६.५ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से १.० डिग्री अधिक

(डॉ० गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी

(डॉ० ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी